संस्मरण

मेरा आकाश

प्रवीण कुमारी

नाम : प्रवीण कुमारी

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी, बी.एड.

प्रकाशित पुस्तकें : मेरी सोच (कविता संग्रह), सोने-से दिन चाँदी-सी रातें (कविता संग्रह)

व्यवसाय : अध्यापन

सम्प्रति : 2082/1, गली नम्बर-1, अंबेडकर नगर, समराला रोड, लुधियाना, पंजाब

बिम्ब – प्रतिबिम्ब प्रकाशन

रजि. कार्यालय : बिम्ब-प्रतिबिम्ब सृजन संस्थान, शॉप नं. 4, लबली ऑटो के पास, ट्रैकऑन कोरियर, फगवाड़ा (पंजाब)

1101, टॉवर-4, सुशांत एस्टेट, सैक्टर-52, गुरुग्राम - 122003

मोबा.: 8528833317, 9877545648

ISBN : 9789391562229

मेरा आकाश

प्रवीण कुमारी

बिम्ब-प्रतिबिम्ब प्रकाशन
फगवाड़ा, 144401 (पंजाब)

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। किसी भी रूप में इसके सम्पूर्ण या किसी अंश के पुनरुत्पादन के लिए प्रकाशन/लेखक की पूर्वानुमति आवश्यक है।

ISBN : 978-93-91562-56-4

प्रकाशक
बिम्ब-प्रतिबिम्ब प्रकाशन
बिम्ब-प्रतिबिम्ब सृजन संस्थान
शॉप नं. 4- ट्रैकऑन कूरिअर
फगवाड़ा, पंजाब-144401
मो-8528833317, 9877545648

सम्पर्क
1101, टॉवर-4, सुशांत एस्टेट, सैक्टर-52
गुरुग्राम-122003
+91-9674386400, +91-8840081836
© लेखिका
संस्करण : 2023
आवरण व रेखांकन : कुँवर रवीन्द्र
मुद्रक
बिम्ब-प्रतिबिम्ब सृजन संस्थान, फगवाड़ा
मूल्य-रुपयेः 250

MERA AKASH
PARVEEN KUMARI

समर्पण

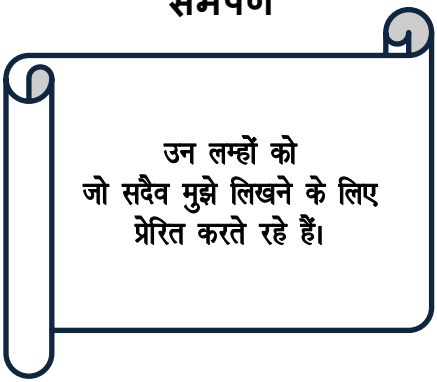

स्मृतियों की अंजुरी

श्रीमती प्रवीण कुमारी का यह तृतीय संग्रह उनके जीवन का एक अनूठा प्रयास है। इन्होंने अपने दैनिक जीवन के लघु अनुभवों को भी अपनी स्मृतियों में संजो कर साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दी है ताकि आम व्यक्ति भी उन अनुभूतियों से परिचित हो सके जिन्हें हम अक्सर हाशिये में धकेल देते हैं।

जीवन के छोटे-छोटे प्रयास, जीवन की छोटी-छोटी घटनाएं हमारी संवेदना को अक्सर छूती हैं लेकिन हम उनसे अनभिज्ञ बने रहते हैं। वास्तव में ऐसे क्षण ही प्रेरणादायक व हृदयतल पर अपनी गहरी छाप देते हैं। उन पलों को हम विस्मृतियों में धकेल देते हैं जो सुखद होते हैं लेकिन इस पुस्तक में लेखिका ने ऐसे क्षणांश हमारे सामने प्रस्तुत करके अपनी भावनाओं की गहनता से अवगत कराया है।

यह रोमांचकारी क्षणिकाएं मन की ख़ुशी, पच्चीस पैसे की साबुनदानी, छोटी-छोटी बातें, सड़कों का ऋण, विलक्षण व्यकितत्व इत्यादि कहीं न कहीं हमें कुछ चिंतन हेतु विवश करती हैं। कई बार ऐसी घड़ियां जीवन को ही परिवर्तित कर देती हैं बस यही उद्देश्य से इस संग्रह का सृजन हुआ है जो साहित्य में स्वागत योग्य है व नयी पीढ़ी के लिये एक प्रेरणा व सबक।

आशा है यह क़लम इसी प्रकार अपनी जिज्ञासाओं व व्याख्यानों द्वारा एक सक्रिय भूमिका के अन्तर्गत समाज को भविष्य में भी प्रकाशमय करती रहेगी। ऐसी ही हमारी इच्छा व शुभकामनाएँ इनके साथ सदैव बनी रहेंगी।

डॉ. मनोजप्रीत
प्रीत साहित्य सदन, लुधियाना

अब हरि हैं मैं नाहिं

श्रीमती प्रवीण कुमारी के लेखन कर्म से मैं व्हाट्सएप के माध्यम से परिचित हुआ। उन्होंने अपनी नवीन कृति ''मेरा आकाश'' की भूमिका लेखन का गुरुतर दायित्व मुझे सौंपा। इस रचना की पाण्डुलिपि मुझे डाक द्वारा प्राप्त हुई। समयाभाव के बाद भी बड़ी उत्सुकता थी कि इसमें है क्या? कल ही इस रचना को आद्योपांत पढ़कर मैंने समाप्त किया है। सहज ही प्रश्न उठता है कि इस कृति में है क्या? यह एक आत्मकथात्मक संस्मरण है। अतीत में तो कोई भी विचरण कर सकता है पर पूरी ईमानदारी से अतीत का विहंगावलोकन रचना को कीमती और उपयोगी बना देता है। शीर्षक पर नज़र फेरें तो साफ पता चलता है कि प्रवीण कुमारी का जीवनाकाश इतना विस्तीर्ण है कि उस चंदोवे में हर उम्र के पाठक को विश्रांति मिल सकती है।

लेखिका ने इस कृति में अपने बचपन, युवावस्था, नौकरी और अपनी आध्यात्मिक आस्थाओं को बड़ी ईमानदारी से उकेरा है, जिसके परिणाम स्वरूप यह कृति आत्मालाप से इतर हर वर्ग के पाठक के लिए पठनीय बन गई है। 'मन की ख़ुशी' में 'पच्चीस पैसे की साबुनदानी' का प्रसंग हो या 'चुनौती का परिणाम' में प्राचार्य की मान्यता को ध्वस्त करते हुए प्राविण्य-सूची में प्रथम स्थान दर्ज कराना हो, बाल मनोविज्ञान के इतने सशक्त उदाहरण हैं कि इस कृति में सभी को अपना-अपना प्राप्य मिल जाएगा।

आस्था के बीज से ही मानवता का जन्म होता है। लेखिका की परमसत्ता के प्रति गहरी आस्था का परिणाम है कि वे जीवन के हर मोड़ पर मानवीय दिखती हैं। प्रत्येक प्रसंग के बाद हरि चरणों में नमन सहज ही कबीर की याद दिला देता है-

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गई मैं भी हो गाई लाल।।

श्रीमती प्रवीण कुमारी ने अतीत की ओर लौटकर वस्तुतः 'आज' को एक सीख दी है, जीवन 'वय' के अनुसार जिया जाए, अपनी क्षमता-योग्यता-रुचि के अनुसार उसे दिशा दी जाए। जीवन में कुछ आदर्श हों, मूल्य हों, निष्ठा हो, तो कठिनाइयाँ भी पानी-पानी हो जाती हैं।

जहाँ तक रचना के कलापक्ष की बात है भाषा सहज-सरल-सुबोध है। शैली रोचक है। लेखिका अहिंदी भाषी हैं इसलिए कुछ सीमाएँ भी हैं। कुल मिलाकर इस कृति में हर वर्ग के पाठक को कुछ न कुछ मिलेगा। किसी को निराश नहीं होना पड़ेगा। अंततः लेखिका को साधुवाद, उनकी यह कृति पाठकों का प्यार पाए, यही शुभेच्छा है।

डॉ. प्रेमकुमार पाण्डेय
एफ ब्लाक, फ्लैट विट्ठलपुरम,
उमदा एकादशी रोड, भिलाई-3

आमुख

बचपन से ही मानव में गुणों-अवगुणों का संगम रहता है। उसके व्यवहार को, उसके आस-पास का वातावरण, उसकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी सहज ही प्रभावित करती हैं। उसी से उसका चरित्र गढ़ता है। इतना ही नहीं उसके प्रारब्ध भी उसका चरित्र निर्मित करने में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। प्रायः एक व्यक्तित्व समाज के समक्ष हो आता है।

यहाँ तक मेरी बात है, मैं व्यक्तिगत कह सकती हूँ कि गाँव के एक साधारण परिवार में मेरा जन्म हुआ, प्रारंभिक शिक्षा वहीं के राजकीय विद्यालय से उत्तीर्ण की। वहीं पर पढ़ते-पढ़ते मैंने विपरीत परिस्थितियों में भी बहुत कुछ सीखने की कोशिश की लेकिन लड़की होने के नाते बहुत कुछ चाहते हुए भी करने का अवसर न मिला। यह त्रासदी मेरे साथ ही नहीं, यक़ीनन मध्यम श्रेणी के अधिक्तर परिवारों की है। करनी और कथनी में ज़मीं-आसमान का अंतर आज भी है। पुरुष प्रधान समाज में कन्या का जन्म जटिल ही नहीं अपितु एक प्रकार की चुनौती ही रहता है। ऐसे में मन का भावुक होना बड़ी बात नहीं लेकिन अपने किरदार में चिड़चिड़ा हो जाना, जिद्दी होना या फिर नकारात्मक हो जाना स्वाभाविक बात है, परन्तु प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में से कुछ सकारात्मक ढूँढ़ना और उसी को अपनी ऊर्जा बना लेना व जीवन में आनन्द भर लेना केवल और केवल प्रारब्धों का हिसाब है। सामान्य दिनचर्या में पल-पल नकारात्मकता हमारे सामने आती है लेकिन जीवन को आनंदमयी रखने के लिए उसी में से सकारात्मक पहलू ढूँढ़ना ही मानव जीवन की सफलता है। कहने से अभिप्राय, मात्र एक विचार आपका जीवन बदलने में सक्षम होता है। महाभारत में द्रोपदी का वाक्य इसका जीवंत उदाहरण है।

प्रस्तुत पुस्तक 'मेरा आकाश' में संकलित संस्मरण आज तक के मेरे जीवन काल में घटित घटनाओं का एक लेखा-जोखा हैं। जिसे बयान करने के पीछे मेरा एक ही ध्येय है कि अपने व्यस्त जीवन में मस्त रहना